14/6/16

पत्रावली पेश हुई। वकील पक्षगण उप०। पत्रावली का अवलोकन किया गया। प्रस्तुत प्रकरण से संबंधित एक अन्य वाद दीवानी प्रकरण मूलचन्द बनाम मदनलाल मु० नं० 61/2011 पूर्व से विचाराधीन है। प्रस्तुत प्रकरण में पूर्व से विचाराधीन उक्त वाद के समान वादग्रस्त विषयवस्तु है, अनुतोष समान है तथा समान पक्षकार होते हुए एक नया पक्षकार जोड़कर प्रस्तुत दावा पेश किया है जबकि पूर्व वाद में ही पक्षकार बनाया जाना चाहिए था। अतः प्रस्तुत प्रकरण पूर्व विचाराधीन वाद मूलचन्द बनाम मदनलाल मु० नं० 61/2011 के साथ संयोजित किया जाता है। प्रस्तुत प्रकरण उक्त पूर्व विचाराधीन वाद के साथ समेकित किया जावे।